गतांक की चीर-फ़ाड़

डॉ. जुगल किशोर गुप्ता

छठा पासपोर्ट रद्द होने के बावजूद नीरव मोदी पांच बार ब्रिटेन यात्रा कर आया

मज़दूर मोर्चा के 17-23 जून 2018 के अंक में राजनीतिक, प्रशासनिक, सांस्कृतिक, आर्थिक व सामाजिक मुद्दों पर अनेक महत्वपूर्ण समाचार प्रकाशित हुए हैं। 'कृष्णपाल ने खोला राज, सूखी यमुना में चलेंगे जहाज-झूठ बोलने से मोदी के मंत्री को भी परहेज नहीं' तथा '51 करोड़ के शिलान्यास लेकर कृष्णपाल फ़िर निकले नारियल फ़ोड़ने' से स्पष्ट कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी व भाजपा के रणनीति के अनुसार जनता को भ्रमित करने व जनता में स्वयं को लगातार चर्चित रखने के लिये केन्द्रीय मंत्री कृष्णपाल गूजर आये दिन किसी न किसी की शिलान्यास करने, पिछले चार वर्ष से निर्माणाधीन मंझावली यमुना पुल के संदर्भ में कोई न कोई नाटक रचने, मंझावली पुल के पिलरों की ऊंचाई बढाने जिससे सूखी यमुना में जहाज चल सके (शेष पुलों की ऊंचाई में बिना कोई बदलाव किये) का ढिंढोरा पीट रहे हैं।

गौरतलब है कि कृष्णपाल ने आज तक जहां भी शिलान्यास किया है उनमें से बहुतों में अभी तक कार्य पूरा नहीं हुआ है। दरअसल ये सारी कवायद इसलिये की जा रही है कि पार्टी के प्रत्येक सांसद को अपने चार साल के कार्यकाल का पूरा लेखा-जोखा पार्टी हाई कमान को देना है, तो दूसरी तरफ़ भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह हरियाणा के सातों भाजपा सांसदों की ज्यादातर रिपोर्ट से संतुष्ट नहीं हैं। इसका अर्थ है कि 2019 के लोक सभा चुनाव के समय भाजपा सांसदों के प्रदर्शन के मूल्यांकन के समय किसी का भी पत्ता कट सकता है।

इंटरपोल की रिपोर्ट के अनुसार भगोड़ा हीरा व्यापारी नीरव मोदी मार्च 2018 के महीने में चार बार अमेरिका, ब्रिटेन व हांगकांग की यात्रायें कर चुका है जबकि भारतीय विदेश मंत्रालय ने उसका पासपोर्ट रद्द कर रखा था, जिसका खुलासा 'नीरव मोदी को मोदी सरकार ने जानबूझ कर भगाया' में किया गया है। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के अनुसार नीरव मोदी ने 6 पासपोर्ट काम में लिये थे, सीबीआई के अधिकारियों के अनुसार उसने रद्द पासपोर्ट पर ही यात्रा की थी और विदेश मंत्रालय के अनुसार उसके पांच पासपोर्ट पहले ही रद्द कर दिये थे और छठा पासपोर्ट 23 फ़रवरी को रद्द कर दिया था। छठा पासपोर्ट रद्द होने के बाद भी नीरव मोदी पांच बार ब्रिटेन गया था। सीबीआई के अधिकारियों के अनुसार बैंक फ्राड की जांच करने वाले पूर्व संयुक्त निदेशक राजीव सिंह के इमेल अकाउंट से भारी मात्रा में मेल भेजी गयी थी जिसकी सीबीआई द्वारा जांच की जा रही है। राजीव सिंह को वापिस अपने गृह राज्य त्रिपुरा भेजा जा चुका है। इस प्रकरण की पूरी निष्पक्षता व निष्ठा से जांच की जाय तो एक बड़ा घोटाला व षडयंत्र सामने आयेगा जिसकी आंच मोदी सरकार पर आने की आशंका है।

पूर्व राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी द्वारा आरएसएस के एक शिविर में संघ के संस्थापक केशव बलिराम हेडगेवार को भारत माता का महान सपूत बताना वास्तव में भारतीय जनता की साम्राज्यवाद विरोधी स्वतंत्रता संग्राम की भावना के विरुद्ध है। हेडगेवार भारतीय जनता के स्वतंत्रता संग्राम के विरुद्ध और ब्रिटिश साम्राज्यवाद के साथ खड़े थे जिसका। 'काला कपूत था हेडगेवार' में निष्पक्षतापूर्वक तथ्यात्मक विवेचन किया गया है।

प्रधानमंत्री मोदी ने जो वादे व घोषणायें किये थे, उनमें से वास्तव में कोई भी पूरा नहीं किया गया है। परंतु जनता को भ्रमित करने के लिये मोदी द्वारा अपनी तथाकथित उपलब्धियों का ढोल पीटा जा रहा है। स्तम्भ 'मोदी के 48 माह, 48 सवाल....' के जरिये पाठकों से उन पर 48 प्रासंगिक प्रश्न पूछे गये हैं, जिन सबका साफ़ जवाब नहीं में है।

राजस्थान, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ विधान सभाओं तथा 2019 में होने वाले लोकसभा चुनावों में भाजपा व आरएसएस का विपक्षी गठबंधन के बीच होने वाली चुनावी दंगल का 'भाजपा के दिन पूरे होने जा रहे, सिर्फ़ चुनावों का इंतज़ार' उभरती राजनीतिक स्थिति का सटीक विश्लेषण किया गया है। जनता से सहानुभूति प्राप्त करने के लिये मोदी ने अपने जान के खतरे का शिगूफ़ा छेड़ दिया है और अमित शाह ने अन्य लोगों व एनडीए के घटकों से सम्पर्क स्थापित करने का अभियान चला रखा है। पाठकों को स्मरण होगा कि गुजरात के मुख्यमंत्री रहते हुये भी नरेन्द्र मोदी ने अपनी जान के खतरे के शिगूफ़े छोड़े थे।

भारत में सरकार व विपक्ष दोनों ही भ्रष्टाचार के विरुद्ध आवाज़ उठाते हैं और भ्रष्टाचार को समाप्त करने का संकल्प लेते हैं, परंतु फ़िर भी भ्रष्टाचार सुरसा के मुख की तरह व्यापक रूप से फ़ैला हुआ है। स्तम्भ खबर (दार) झरोखा में 'भ्रष्टाचार में डूबा भारत' में स्पष्ट किया गया है कि भारत में भ्रष्टाचार का एक सांस्कृतिक पहलू है। भारतीय भ्रष्ट व्यक्ति का विरोध करने की बजाये उसे सहन करते हैं। वे भगवान व धार्मिक संतों और बाबाओं को भी आशा में पैसा देते हैं कि वे बदले में मनवांछित फ़ल देंगे। इसलिये भारत भ्रष्टाचार में डूबा हुआ है।

जनता का ध्यान मुख्य मुद्दों से भटकाने के लिये मोदी सरकार द्वारा विभिन्न नाटक किये जा रहे हैं, जैसे कभी योगाभ्यास, कभी फ़िट इंडिया अभियान और दूसरों को चुनौती देना आदि, जिस पर 'जन, प्रदूषण से बदहवास, महान जन-फ़िट है बॉस' में योगमुद्रा में बैठे मोदी की फ़ोटो तथा नरेन्द्र मोदी द्वारा लगातार विकास का नाम जपते रहने पर 'नरेन्द्र आज भी ऐसा ही है। उसने बर्बादी का नाम विकास रखा है, हर रोज बर्बादी को विकास बताकर खुश होता है' और मोदी द्वारा दावा करना कि वह लगातार विकास करते हैं कभी छुट्टी नहीं लेते पर 'बेटा न तू खुद सोता है, न किसी को सोने देता है, ऐसा क्यों कर रहा है? 'बापू मुझे भी आप जैसी अपनी फ़ोटो नोट पर छपवानी है।' कार्टूनों द्वारा मोदी की नीतियों तथा मंशा पर उपयुक्त व्यंग्य किया गया है।

सरकार लगी गाय की बीन बजाने, दूध भैंस का लाभकारी

हिसार (म.मो.) केंद्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों ने कहा कि खराब बताया जाने वाला ए-वन दूध भारत की किसी भी भैंस में नहीं है, सभी में ए-टू है, पोषणता के अलावा ह्रदय रोगियों और ऑस्टियोपारोसिस के रोगियों के लिए भी गाय से बेहतर है भैंस का दूध।

प्रदेश सरकार बेशक गाय के संवर्धन के लिए विभिन्न योजनाओं की बीन बजा रही हो लेकिन असलियत की बात करें तो भैंस का दूध गाय के दूध से हर लिहाज में लाभकारी है। इसे ए-व व ए-टू की कसौटी पर मापें या पोषणता, ह्रदय रोग में या कैल्शियम की कमी वाले ऑस्टियोपारोसिस रोगियों की बात करें। यही नहीं, किसानों की आय दोगुना करने के प्रधानमंत्री के सपने को साकार करने के लिए भी गाय की तुलना में भैंस ज्यादा है।

यह दावा कोई राजनीतिक पार्टी नहीं बल्कि केंद्रीय कृषि मंत्रालय के अंतर्गत कार्यरत भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) के हिसार स्थित केंद्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान (सीआईआरबी) के वैज्ञानिकों ने विभिन्न शोध के आधार पर किया है।

संस्थान के निदेशक डॉ. इंद्रजीत सिंह ने बताया कि वे इस बारे में पशुपालकों को जागरुक भी करते हैं। साथ ही कहा कि बेशक उनका उद्देश्य भैंस को बढ़ावा देना और इसकी नस्ल में विकास करना है लेकिन वे तथ्यों और रिसर्च से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर ही बात करते हैं। इस मामले में भैंस का दूध गाय के दूध से काफी अच्छा है। उन्होंने कहा कि स्वयं केंद्रीय कृषि मंत्री राधामोहन जी भी संसद में एक सवाल के जवाब में स्पष्ट कर चुके हैं कि भारत की भैंसों से ए-टू दूध ही पैदा होता है।

-सीआईआरबी के वैज्ञानिक डॉ. अशोक बूरा ने बताया कि दूध में प्रोटीन बीटा केसीन होता है, उसकी की फोरम को ए-वन और ए-टू का नाम दिया गया है। हालांकि इस बारे में देश में कोई वैज्ञानिक अध्ययन नहीं हुआ है कि कौन से प्रोटीन वाला दूध ज्यादा लाभकारी है। लेकिन न्यूजीलैंड व आस्ट्रेलिया में जर्सी गाय के दूध के साथ इस तरह के अध्ययन करने का दावा किया जाता है। इस अध्ययन को ए-टू दूध की मार्केटिंग के तौर पर भी देखा जाता है। इस अध्ययन में दावा किया गया है कि ए-टू दूध लाभकारी है और ए-वन दूध हानिकारक है। यदि इसको भी सही मान लें तो ए-वन व ए-टू दूध गायों में होता है और भैंसों में केवल ए-टू दूध ही होता है।

-हिसार के वरिष्ठ बाल रोग विशेष डॉ. सतीश जावा ने बताया कि हम एक साल तक बच्चों को गाय और भैंस किसी का भी दूध पिलाने की सलाह नहीं देते। किसी स्थिति में यदि बच्चों को बाहरी दूध पिलाने की सलाह देते हैं तो वह एक साल के बाद। गाय के दूध की भ्रांति इसलिए फैली हुई है क्योंकि उसमें फैट कम होता है और बच्चों के लिए सुपाच्य होता है, इसके अलावा कोई दूसरा कारण नहीं है। वैसे छह माह तक बच्चों को मां का दूध, इसके बाद अर्ध-ठोस खाद्य पदार्थ (दाल, खिचड़ी, हलवा, केला आदि) खिलाना चाहिए। इसके बाद ही पशुओं का दूध पिलाना चाहिए और वह भी मलाई उतारकर।

-गाय के दूध में 87.80 ग्राम पानी होता है जबकि भैंस के दूध में यह मात्रा 81.10 होती है। इसलिए भैंस का दूध डेयरी उत्पादों के लिए गाय के दूध से ज्यादा अच्छा है।

-गाय के दूध में 3.2 ग्राम प्रोटीन होती है और भैंस के दूध में 4.5 ग्राम प्रोटीन होती है। इसलिए पोषण के मामले में भैंस का दूध ज्यादा अच्छा है।

-गाय के दूध में 3.9 ग्राम फैट होती है और भैंस के दूध में 8 ग्राम फैट होती है। इसलिए भैंस के दूध का बाजार में ज्यादा दाम मिलता है।

-गाय के दूध में 2.4 ग्राम सेचुरेटिड फेटी एसिड (एसएफए) होता है जबकि भैंस के दूध में यह 4.2 ग्राम होता है। यह घी जल्दी जमाने में मदद करता है।

-गाय के दूध में मोनाउन सेचुरेटिड फेटी एसिड (एमयूएसएफए) की मात्रा 1.10 होती है और भैंस के दूध में 1.70 होती है। इस प्रकार भैंस का दूध ह्रदय रोग में भी गाय के दूध से ज्यादा अच्छा है।

-गाय के दूध में पोली अनसेचुरेटिड फेटी एसिड (पीयूएफए) की मात्रा 0.10 ग्राम और भैंस के दूध में यह 0.20 ग्राम होती है। इसलिए भी भैंस का दूध ह्रदय रोग में गाय के दूध से ज्यादा लाभदायी है।

-गाय के दूध में 14 मिलीग्राम कोलेट्रॉल होता है जबकि भैंस के दूध में 8 मिलीग्राम कॉलेस्ट्राल होता है। इसलिए भी भैंस का दूध ह्रदय रोग में लाभदायक होता है।

-इसी प्रकार गाय के दूध में लॉक्टस शुगर 4.8 मिलीग्राम और भैंस के दूध में 4.90 मिलीग्राम। यानिकि भैंस का दूध ज्यादा मीठा होता है।

-गाय के दूध में 120 मिलीग्राम कैल्शियम और भैंस के दूध में 195 मिलीग्राम कैल्शियम होता है। गाय के दूध में 0.08 मिलीग्राम फास्फोरस और भैंस के दूध में 0.14 मिलीग्राम फास्पोरस होता है। यानिकि हड्डियों को ज्यादा मजबूत करता है।

-गाय के दूध में 275 किलोजोउल एनर्जी और भैंस के दूध में 463 किलोजोउल एनर्जी होती है। यानी कि ज्यादा एनर्जी होती है।

मोदी राज में घोड़ा है 'शूरवीरों' की शान, दलित नहीं कर सकता सवारी

जनज्वार (विशेष) बराबरी का समाज निर्मित करने का दावा करने वाली मोदी सरकार दलित उत्पीड़न पर कितनी सीरियस है इसका पता उन घटनाओं से ही लग जाता है जिन पर लगाम नहीं लग पा रही है। उल्टा जितनी बड़ी तादाद में यह घटित हो रही हैं उससे लगता है जैसे सरकार की ऐसी घटनाओं को अघोषित शह है। अगर ऐसा नहीं होता तो सरकार क्यों नहीं कोई कानून का पालन करा पाती जिससे दलित उत्पीड़न की घटनाओं पर रोक लग सके।

हालिया मामला मोदी के गृहराज्य गुजरात का है, जहां एक दलित लड़के प्रशांत सोलंकी की बारात को इसलिए रोककर रखा गया क्योंकि दलित दूल्हा घोड़े पर चढ़कर जा रहा था। सवर्णों को इस बात की आपत्ति थी कि दलित लड़का घोड़ी कैसे चढ़ सकता है, इसी बात पर घंटों तक बारात रोकी रखी गई। समय से पुलिस के हस्तक्षेप से मामला शांत हुआ और एक हिंसक घटना होने से टल गई। मीडिया में आई खबरों के मुताबिक रविवार 17 जून को गुजरात स्थित गांधीनगर के मनसा तालुका के परसा गांव में जाति के कुछ लोगों ने दलित दूल्हे प्रशांत सोलंकी के घोड़ी पर सवार होने को मुद्दा बनाते हुए बारात को आगे नहीं बढ़ने दिया। प्रशांत सोलंकी की बारात मेहसाना से परसा गांव के लिए रवाना हुई थी, जहां वह वर्षा परमार से शादी करने के लिए बारात लेकर निकले थे।

एक डेरी प्लांट में काम करने वाले दलित दूल्हे प्रशांत सोलंकी के चचेरे भाई विपुल सोलंकी के मुताबिक परसा गांव के पास तक कार से जाने के बाद तय किया गया था कि दूल्हा गांव तक घोड़ी पर सवार होकर जाएगा। मगर जैसे ही हम वहां पहुंचे गांव के उच्च जाति के दरबार समुदाय के 10-15 लोगों ने हमें धमकाया कि दलित घोड़ी पर नहीं बैठ सकता, इसलिए वह पैदल जाए। साथ ही यह भी कहा कि घोड़े की सवारी सिर्फ शूरवीरों के लिए होती है, दलितों के लिए नहीं।

बाद में जब किसी ने पुलिस ने शिकायत दर्ज की तो पुलिस ने मामले को संभाला। जांच के बाद पुलिस ने बताया कि परसा गांव के कुछ सवर्ण लोगों ने दलित दूल्हे प्रशांत सोलंकी को घोड़ी पर नहीं चढ़ने दिया। बाद में पुलिस उपाधीक्षक के नेतृत्व में स्थानीय पुलिस, स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप और अपराध शाखा के कर्मियों की टीम मौके पर पहुंची और हालात को काबू में किया। जब पुलिस टीम मौके पर पहुंची तो बारात को रोक रहे लोग वहां से भाग खड़े हुए और पुलिस सुरक्षा में बारात रवाना हुई। पुलिस तब तक वहां मौजूद रही जब तक शादी के सारे कार्य संपन्न नहीं हो गए।

अगर समय पर पुलिस मामले में हस्तक्षेप नहीं करती तो यह घटना हिंसा का रूप ले सकती थी। बावजूद इसके पुलिस सुरक्षा में ही बारात को रवाना किया गया ताकि उच्च जाति के लोग कोई बवाल खड़ा न करें। प्रशांत सोलंकी की तरफ से भी हालांकि मामला शांतिपूर्वक निपट जाने के चलते कोई प्राथमिकी दर्ज नहीं कराई गई।

गौरतलब है कि पिछले दिनों हरियाणा के भूस्थाला गांव में इसी तरह का एक मामला समाने आया था। वहां ऊंची जाति के कुछ लोगों ने एक दलित दूल्हे को घोड़ा बग्गी पर चढ़ने से रोक दिया था और बारातियों और मामले की जांच करने पहुंची पुलिस दल पर पथराव किया था।

इस मामले में कुरुक्षेत्र के पुलिस अधीक्षक सिमरदीप सिंह ने मीडिया को बताया कि 'ऊंची जाति के लोगों ने कुरुक्षेत्र के भूस्थाला गांव में एक दलित दूल्हे को घोड़ा बग्गी पर चढ़ने से रोक दिया था, जिससे दलितों और ऊंची जाति के लोगों के बीच तनाव हुआ।' मसले को हल करने के लिए मौके पर पुलिस पहुंची तो सवर्णों ने उस पर भी जमकर पथराव किया।

पुलिस ने शुरुआती जांच के बाद बताया कि ऊंची जाति के लोग नहीं चाहते थे कि दलित दूल्हा उस मंदिर में जाए, जहां ऊंची जाति के लोग अक्सर घोड़े पर जाते हैं। वे इस बात पर अड़े हुए थे कि दलित दूल्हा पैदल गांव के रविदास मंदिर जाए।

इससे पहले भी दलितों के मंदिर में प्रवेश और दलित दूल्हे के घोड़ी पर चढ़ने को लेकर तमाम हिंसक घटनाएं होती रहती हैं, मानो मंदिर और घोड़ी पर बैठने का सर्वाधिकार उच्च जाति के लिए ही सुरक्षित हो।

दिल के रोगी को ईएसआई .....

पेज एक का शेष

के साथ घबराहट व अत्याधिक पसीना आ रहा था। बिगड़ती हालत के चलते वह करीब आठ बजे ईएसआई डिस्पेंसरी सेक्टर 55 पहुंचा। वहां बैठे एक हरामखोर बाबू ने पर्ची बना कर डॉक्टर को दिखाने की बजाये उसे जवाहर कॉलोनी डिस्पेंसरी की ओर धकेल दिया। हालत बद से बद्तर होती देख वह उसी रिक्शा से सीधी एनएच-3 स्थित मेडिकल कॉलेज अस्पताल पहुंचा करीब साढे आठ बजे। वहां कैजुअल्टी में तैनात डॉक्टर ने उसे धमकाते हुये कहा कि ड्रामेबाज़ी मत कर जा कर ओपीडी में दिखा ले। दर्द से चिल्लाते दीपक व साथ आये उसके पिता ने डॉक्टर को समझाने का बहुत प्रयास किया लेकिन डॉक्टर अपनी नालायक जिद पर कायम रहा। मरता क्या न करता, मजबूर दीपक के पिता उसे लेकर पास के बीके अस्पताल में ले गये जहां उसका सही से इलाज हो गया। अब जब बीके अस्पताल में अदा किये गये बिल का क्लेम ईएसआई निगम से किया गया तो सबके होश उड़ गये। सबसे पहले तो सेक्टर 55 वाले बाबू और फ़िर कैजुअल्टी वाले डॉक्टर ने अपने बचाव में मरीज को डरा धमका कर लिखवा लिया कि वह तो अपनी मर्जी से बीके अस्पताल गया था।

इस घटना ने उस बीके अस्पताल को भी अच्छा कहलवा दिया जिसके पास ईएसआई अस्पताल के मुकाबले न तो स्टाफ़ है और न ही संसाधन।

इस मामले में मेडिकल कॉलेज अस्पताल के डीन डॉक्टर दास से पूछने पर उन्होंने दुख जताते हुये कहा कि मामले की जांच की जा रही है। दोषी डॉक्टर को पहचानने के लिये अभी मरीज़ सामन नहीं आ रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि यद्यपि उनका अनुबंध नहीं है फ़िर भी वे बिल का तुरंत भुगतान करने जा रहे हैं। अभी तक तो वे अपने इस तरह के मरीज़ों को मैट्रो व एशियन जैसे अस्पतालों को रैफ़र करते थे जो बहुत महंगे पड़ते हैं। यह बीके वाला तो सीजीएचएस रेट से भी सस्ता है।

एयरटेल का बायकॉट करें

पूजा सिंह नाम की एक वाहियात लड़की ने अपने डी.टी.एच. की सेवा से सम्बन्धित एक शिकायत एयरटेल के ट्विटर हैंडल पर की थी, जिसके बाद शोएब नाम के एक कर्मचारी ने कम्पनी के प्रतिनिधि के रूप में ट्विटर पर लड़की से बात की।

इसी के बाद लड़की ने उस कर्मचारी से बात करने से इन्कार कर दिया और कहा कि मुस्लिम कर्मचारी पर उसे भरोसा नहीं है, इसलिए कम्पनी उसकी शिकायत की सुनवाई के लिए कोई दूसरा कर्मचारी उपलब्ध करवाए।

लड़की की इस माँग के बाद कम्पनी ने अपने ट्विटर हैंडल से शिकायत सुनने वाले कर्मचारी को बदल दिया।

खबर देने का मक़सद ये है कि अब आप लोग अपने मोबाइल से एयरटेल की सिम को बदल दीजिए। आप जब पोर्ट का मैसेज करेंगे तब आपके पास ऐयरटेल से कॉल आएगा।

वे आपसे असन्तुष्ट होने का कारण पूछेंगे तब आप उनसे कहिए कि: आप चोर थे, ठग थे, मक्कार थे। हमने आपके तमाम ऐबो के बावजूद आपको झेला..

लेकिन अब पुष्टि हो चुकी की आप साम्प्रदायिक मानसिकता के रोग से पीड़ित दंगाई भी हैं। इसलिए आप जैसे साम्प्रदायिक दंगाइयों की कम्पनी का सिम हम नहीं चला सकते।

आप दिल-से-दिल जोड़ने का स्लोगन देकर मार्किट में उतरे थे लेकिन अब कम्युनल बनकर देश के रोज़ खाने कमाने वाले नागरिकों को हिन्दू-मुस्लिम के नाम पर तोड़ने वाले टुच्चे हो चुके हैं।